लोक कला - कालबेलिया

Duration : 02.45 Transcribed words : 459

00.11 कलबेलिया प्रजाति की दो लड़कियाँ डांस कर रही हैं एवं दो पुरूष बजा रहे हैं...

00.17 रवि कान्त शर्मा : कालबेलिया प्रजाति विशेष रूप से गोरख नाथ जी, नाथ सम्प्रदाय से जुड़े हुये लोग हैं... जहाँ पर नाथ गुरु ने अपने दो शिष्यों की, कन्नी पावजी, और एक और शिष्य. थे, उनकी दोनों की परीक्षा ली... जब वो, उन्होंने अपनी पूरी, पढ़ाई पूरी कर ली... तब परीक्षा के रूप में दोनों शिष्यों को कहा कि भई जाओ, अपनी योग्यता सिद्ध करिये आप... तो जो कन्नी पावजी हैं ये जाकर के साँपों का जहर इकट्ठा कर लाये... तो उसी दिन से श्रापित हो गये...

00.51 कलबेलिया प्रजाति के दो दो पुरूष बजा रहे हैं...

01.01 रवि कान्त शर्मा : आज पूरे विश्व में नाथ सम्प्रदाय है... नाथ सम्प्रदाय में एक सम्प्रदाय, जो अघोड़ / अघोढ़ पंथ पर चलता है, जो सिद्धियाँ अलग अलग प्रकार की प्राप्त करते हैं... एक तो वो रहे और दूसरे रहे कन्नी पाव जी... जिनके परम्परा में ये आज के रूप में जो हम कालबेलिया देखते हैं...

01.17 कलबेलिया समुदाय की कई महिलायें नाच रही हैं एवं गा बजा रहे हैं...

01.25 कमला सपेरा : पेली तो गाँव में रोटी वोटी माँग के खाते थे... लेकिन वो गधे पे लद के जाते थे घूमने के लिये... मोटर गाड़ी नहीं रहती थी... तो पैदल पैदल चलना पड़ता... पानी नहीं, तो पानी का मटका ऊपर रख के, उसको ले के, बच्चे बच्चे के लिए ऊपर रख के लेकर जाते थे तो बच्चा बच्ची को गधे पे बैठाते के जाते थे... तो वो जाति का जो समाज था ये लोग करते आये... करते, बांधते के मैंने इधर पुष्कर में बस गया और गाना डांस सीख गया वे... वे माँगना खाना सब छोड़ दिया वे... अब केवल डांस करते रहते हैं...

02.00 कलबेलिया प्रजाति की लड़कियाँ डांस कर रही हैं एवं पुरूष बजा रहे हैं...

02.02 राखी सपेरा : पहले हम जैसे साज के साथ नहीं नाचते थे, खुद गाना गाते थे, खुद ही नाचते थे... गांव में जैसे धान के लिये, आटे के लिये, खाने के लिये... लेकिन आजकल तो सब

आगे से आगे बढ़ गये, स्टेजों पर करते हैं... होटलों में करते हैं... बड़े बड़े आर्टिस्टों के साथ करते हैं... पहले हम डरते थे, बड़ा आर्टिस्टों के साथ कैसे बात करेंगे, कैसे डांस करेंगे, लेकिन अभी कोई डर नहीं आता है... सब खुल के कर लेते हैं...

02.30 कलबेलिया समुदाय की लड़कियाँ डांस कर रही हैं एवं पुरूष बजा रहे हैं...

02.33 राखी सपेरा : बचपन से ले के बूढ़े तक, मरते तक नाचते सब, नाचना चाहते हैं... और आगे से आगे जाना चाहते हैं... ये नृत्य को हम बहुत दूर ले जाना चाहते हैं...

02.41 - गाना / संगीत -